छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर द्वारा
प्रादर्श पर्यावरण परियोजना कार्य
कक्षा – 9वीं

प्रोजेक्ट कार्य – 1

उद्देश्य : – मानव और जानवरों के बीच प्यार का बंधन।

प्रेम स्वतंत्रता की भावना है जिसे ब्रह्मांड में किसी भी मौजूदा या किसी काल्पनिक चित्र के साथ महसूस किया जा सकता है। मनुष्य और जानवर के बंधन में भाषा का कोई अवरोध नहीं है क्योंकि प्रेम की सार्वभौमिक भाषा दिल से बोली जाती है। न तो कोई उम्मीदें हैं, न ही हमारी भावनाओं को किसी प्रकार की स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है अगर हम प्यार में हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हर व्यक्ति के पास अपने परिवार में एक पालतू जानवर होगा, उन्होंने अनुभव किया होगा कि वे हमारे दोस्त बन गए हों और बाद में हमारे परिवार का हिस्सा अनजाने में। यह एक अजनबी की तरह है, हमारे भोजन को साझा करके हमारे जीवन का हिस्सा बन जाता है जैसे कि हम एक एकल परिवार हैं, जो पूरे जीवन में प्यार के कार्य के रूप में खड़ा होता हैं।

हमारे जीवन में छोटी चीजों से खुशी प्राप्त करना हम जानवरों के दोस्ती से सीखते हैं। हम खेल सकते हैं, लड़ाई कर सकते हैं, अपना भोजन साझा कर सकते हैं, चलने के लिए जा सकते हैं और उनके साथ आनंद उठा सकते हैं जैसे हम अपने दोस्तों के साथ करते हैं। कभी-कभी अपेक्षाओं या गलतफहमी से मानवीय दोस्ती को तोड़ सकता है, लेकिन ये चीजें कभी नहीं आते हैं, जब हम जानवरों के साथ दोस्ती करते हैं। हम सभी अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से साझा कर सकते हैं क्योंकि जानवरों का न्याय नहीं होगा। वे हमारी गलतियों या उन चीजों के कारण नहीं पूछेंगे जो हमारे जीवन में गलत हो गए थे। जब भी हमें उनकी जरूरत होती है, वे बिना किसी शर्त के बगल में ही रहेंगे। यहां तक कि जानवर मनुष्यों के समान भावनाओं को साझा करते हैं। जब भी वे परेशान हो जाते हैं, तब हम उनकी मौन महसूस कर सकते हैं। हम उनकी शरारत में उनकी खुशी महसूस कर सकते हैं। कभी-कभी हम उन्हें असहज महसूस करते हैं जब वे हमारे दूसरे दोस्तों के साथ मिलते हैं। यह अजीब लगता है लेकिन हम इन छोटी चीजों में उनका प्यार महसूस कर सकते हैं।

❑❑

1. एन.पी. वर्मा (प्राचार्य)
2. सुभाष शर्मा (प्राचार्य)
3. आई.के. विश्वकर्मा (प्राचार्य)

प्रोजेक्ट कार्य – 2

उद्देश्य : – रसोई घर बाग।

रसोई घर बाग या ऑंगन बाड़ी उस बाग को कहा जाता है जो घर के पिछवाड़े या बगल में या घर के ऑंगन में अवस्थित खुली जगह में लगाया जाता है, ऐसी वाटिका जहाँ पारिवारिक श्रम से परिवार के उपयोग हेतु विभिन्न मौसम में, विभिन्न सब्जियाँ तथा मौसमी फल प्राप्त किये जा सके। यह वाटिका बड़ी भी हो सकती है तथा छोटी अर्थात् दो क्यारियों वाली भी हो सकती है। आधुनिक समय में गृहणी रसोई वाटिका के लिए थोड़ा स्थान घर के पिछवाड़े प्रयोजनवस छुड़वाती है। प्राचीनकाल से ही घर के पिछवाड़े या अगल –बगल या ऑंगन में रसोई घर बाग लगाने का शौक होता है।

रसोई घर – बाग का उद्देश्य

रसोई घर बाग लगाने का उद्देश्य निश्चित रूप से पुष्पो– द्यान लगाने के उद्देश्य से भिन्न होता है, रसोई घर बाग लगाने का उद्देश्य घर की शाक–सब्जियों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ण या आंशिक पूर्ति करने का प्रयास करना तथा दैनिक आहार आयोजन में विविधता एवं ताजगी लाने की समुचित मात्रा में हरी–शाक–सब्जियाँ, सलाद के पत्ते आदि प्रतिदिन प्राप्त करने का प्रयास करना होता है। रसोई घर बाग लगाने का उद्देश्य मूलतः उपयोगिता पूरक होता है।

रसोई घर बाग लगाने से प्रतिदिन ताजी हरी– शाक सब्जियाँ सलाद तथा धनिया आदि की पत्तियाँ प्राप्त करते रहने की इच्छा की संतुष्टि करने का उद्देश्य प्रधान होता है सौन्दर्य एवं हरीतिमा स्थापित करने का उद्देश्य गौड़ होता है।

रसोई घर बाग से लाभ

हर मौसम की शाक–सब्जियाँ ताजी एवं हरी अवस्था में उपलब्ध हो जाती है। नींबू, पपीता, केला आदि जैसे फल बाजार से प्राप्त करने की तुलना में कम खर्च तथा सरलता से सर्वदा उपलब्ध हो सकते हैं। रसोई घर बाग की जातीय गंदगी, गंदाजल, राख, शाक–सब्जियों के डंठल छिलके उपयोग में न आने वाले भाग, चावल–दाल, शाक–सब्जियों तथा मांस–मछली के धोवन आदि के खपाने का अच्छा साधन होता है। इन बेकार पदार्थो का उपयोग खाद के रूप में भी किया जाता है।

पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम

नींबू, पपीता, केला तथा अमरूद आदि के वृक्ष पर्यावरण को प्रदूषित होने से रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

घर के पर्यावरण में हरीतिमा के तत्व की वृद्धि करना

शाक–सब्जियों के पौधें, लताएँ, नींबू, पपीता, केला तथा अमरूद आदि के वृक्ष घर के पर्यावरण की हरीतिमा में वृद्धि करते हैं।

❑❑

प्रोजेक्ट कार्य – 3

उद्देश्य : – हमारे आस-पास के औषधीय पौधों का अध्ययन करना।

अदरक

उपयोग : – अदरक भारतीय किचन (रसोई) का अहम हिस्सा है। भारतीय व्यंजनों में इसका प्रयोग बहुतायत होता है क्योंकि यह भूख और पाचन क्षमता को बढ़ाता है। सर्दी और बरसात के दिनों में अदरक वाली चाय पीने का आनंद ही कुछ और है क्योंकि यदि आपको जुकाम हुआ है, तो यह आपके जमे कफ गलाकर खत्म कर देगी।

हल्दी

उपयोग– हल्दी का पेटेंट भले ही अमेरिका ने ले लिया हो लेकिन भारत में इस औषधीय पौधे के गुणों को आदिकाल में ही पहचान लिया गया था । हल्दी में एंटीबायोटिक गुण होते हैं जिससे यह त्वचा को निखारने के साथ-साथ गंभीर चोट लगने पर दूध के साथ मिलाकर पीने से आराम देता है। सर्दी जुकाम में भी हल्दी वाला दूध पीने से जल्दी आराम मिल जाता है। जिन्हें कील-मुँहासे की समस्या रहती है वो हल्दी का लेप प्रयोग करें, तो राहत मिलती है। हल्दी का सेवन दिल की बीमारियों में बहुत लाभकारी रहता है।

लहसुन

उपयोग – भारत ही नहीं अधिकांश दक्षिण एशियाई देशों में लहसुन का प्रयोग खाने में किया जाता है। औषधीय पौधे लहसुन के सेवन से कोलेस्ट्राल तो कम होता ही है साथ ही यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। जिन व्यक्तियों के ब्लड प्रेशर यानि उच्च रक्त चाप की समस्या रहती है उनके लिए इसका सेवन बहुत लाभकारी है। आप लहसुन की फलियाँ कच्ची अथवा तल कर प्रयोग कर सकते हैं।

एलोवेरा

उपयोग – गुणकारी एलोवेरा की पत्तियों के गूदे का जूस आपकी त्वचा को सुंदर और खिला-खिला बनाता है। यह आपकी त्वचा को माश्चराइज (नमी देता) करता है। साथ ही यह अनेक बीमारियों के लिए भी गुणकारी है।

बिच्छू घास

उपयोग – बिच्छू घास जंगली पौधा है जिसकी रगड़ से आपको त्वचा में जलन होने लगती है। लेकिन इसकी पत्तियों का काढ़ा गठिया और किडनी स्टोन होने की स्थिति में बहुत लाभकारी हो सकता है। इसकी जड़ों से निकाला जाने वाला रस भी प्रोस्टेट और ब्लैडर सम्बंधित बीमारियों को ठीक करने में सक्षम है।

❑❑

प्रोजेक्ट कार्य – 4

उद्देश्य – गाँव के जीवन शैली का अध्ययन।

आज भारत एक विकासशील देश है। फिर भी आज शहरों के मुकाबले भारत में बहुत अधिक गाँव है। रिपोर्ट के अनुसार लगभग 75 प्रतिशत से ज्यादा भारतीय जनसंख्या गाँव में रहते हैं। गाँव का जीवन शांत, हरियाली और प्रदूषण मुक्त होता है। गाँव के खेतों की सुंदरता और हरियाली देखने का मजा कुछ और ही होता है। गाँव में सभी बड़े निर्णय पंचायत ऑफिस के अधिकारी और सरपंच के माध्यम से पारित होते हैं।

शिक्षा – आज भी इस आधुनिक युग में गाँव का जीवन शहरों से बहुत अलग है। गाँव में पूर्ण रूप से शिक्षा की सुविधाएँ आज भी उपलब्ध नहीं हो पाए हैं। आज भी ज्यादातर गाँव में मात्र प्राइमरी स्कूलों की सुविधा है और कुछ बड़े गाँव में मात्र हाई स्कूल की सुविधा है। इस प्रकार ज्यादातर लोग गाँव में अशिक्षित रह जाते हैं।

गाँव की जीवन शैली

पहले भारत के सभी गाँव में बांस और भूसे से बने चाट हुआ करते थे और घर भी मिट्टी के होते थे परन्तु अब प्रधानमंत्री आवास योजना की मदद से गाँव में गरीब लोगों को मुफ्त में पक्के घर मिल रहे हैं। लगभग सभी गाँव के लोग खेती-किसानी करते हैं और अपने घरों में मुर्गियाँ, गाय-भैंस, बैल और बकरियाँ पालते हैं। साथ ही गाँव के लोग शहरी लोगों की तरह सब्जी-मंडी में सब्जियाँ खरीदने नहीं जाते हैं। हर कोई अपने खेतों और बगीचों में सब्जियाँ लगाते हैं और खुद के घर की सब्जियाँ खाते हैं।

गाँव के लोगों का मुख्य कार्य खेती करना होता है। आज भी शहरों में जिन अनाजों को लोग खाते हैं, सभी गाँव के खेतों से ही आता है। आज भी इस 21 वीं सदी में कई ऐसे गाँव हैं जहाँ तक पहुँचने के लिए अच्छी सड़क तक नहीं हैं। हालांकि प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अनुसार ज्यादातर गाँव को अब पक्की सड़कों से जोड़ा जा चूका है परन्तु फिर भी कुछ ऐसे गाँव हैं, जहाँ पर सड़क ना होने के कारण वहाँ जाना तक बहुत मुश्किल होता है। उन जगहों पर सड़क ना होने के कारण बारिश के महीने में कीचड़ भर जाता है, गड्ढों के कारण जाना मुश्किल हो जाता है।

निष्कर्ष – शहर के मुकाबले गाँव में बहुत कम लोग रहते हैं। गाँव में लोगों के घर के आस-पास बहुत खुली जगह होती है और हर किसी व्यक्ति के पास मोटर साइकिल या कार नहीं होता है। गाँव में ज्यादातर लोगों के पास वाहन के रूप में बैलगाड़ी होता है। परन्तु कुछ जगहों में अब गाँव में भी लोगों के पास गाड़ी-मोटर की सुविधाएँ हैं।

गाँव के पास भी सरकार की ओर से प्राथमिक चिकित्सा केंद्र जगह-जगह खोले जा चुके हैं जिससे गाँव के लोगों को भी चिकित्सा के क्षेत्र में सुविधाएँ मिल रही हैं। एमरजेंसी के समय के लिए सरकार ने अब ज्यादातर प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों में मुफ्त 108 एम्बुलेंस सर्विस प्रदान की है, जो बहुत मददगार साबित हुए हैं।

❑❑

प्रोजेक्ट कार्य – 5

उद्देश्य – वन की लुप्त होती वन प्रजातियाँ।

भारतीय गैंडे – के लोप हो जाने की बड़ी भारी आशंका है। एक समय था जब भारत के उत्तर पश्चिम से लेकर इंडोचीन तक भारतीय गैंडा पाया जाता था। बाबर ने सिंधु नदी के तट पर गैंडे का शिकार खेला था, पर अब नेपाल के चितावन जंगल और पश्चिमी बंगाल के उत्तरी जंगलों तथा असम के एक अति सीमित क्षेत्र में कतिपय भारतीय गैंडों को संरक्षण प्राप्त है।

भारतीय जंगली भैंस – भी एक ऐसी जानवर है, जो कदाचित अपने अंतिम दिन गिन रही है। अब से कुछ ही वर्ष पूर्व वह मध्यप्रदेश में काफी संख्या में पाई जाती थी, पर अब उसकी संख्या घट गई है और असम, मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा के एक सीमित क्षेत्र में ही पाई जाती है। जंगली भैंस के रहने का स्थान आदमियों की आबादी का नहीं है और न वह जंगलों में जाती है, वह तो दल–दल तथा घास वाले क्षेत्रों में ही रहती है। बढ़ती खेती के प्रसार–आंदोलन में वह एक प्रकार से धकेल कर एक संकुचित क्षेत्र में पहुँचा दी गई है। यही गति रही तो उसका खात्मा भी निश्चित है।

भारतीय जंगली चीता – झाड़ियों में रहने वाला पशु है। दक्षिण और मध्यप्रदेश में वह बहुतायत से पाया जाता है। घने जंगलों में वह रहता नहीं है और कृषि प्रसार के लिए झाड़ियाँ काट डाली गई तो नासमझ शिकारियों की गोली से वह मारा गया। वर्षो की खोज के बाद भी भारतीय जंगली चीता भारत के किसी भी क्षेत्र में अब नहीं मिलता। सन् 1951 में ही वह प्राकृतिक अवस्था में अंतिम बार देखा गया था।

भारतीय सिंह या गिर सिंह – की संख्या भी सीमित है, जो अनुमानतः 300–500 होगी। वर्षो से उन्हें संरक्षण प्राप्त है, इसलिए वे अभी इतनी संख्या में हैं। हिरणों और सूअरों की संख्या भी घट गई है। अतः सिंहों की प्राकृतिक खुराक कम हो गई है। नासमझ और लालची शिकारी पैसे और कद बढ़ाने के लिए जहाँ–कहीं सिंह मिलते हैं, उन्हें मार डालते हैं।

भारतीय जंगली गधा – कच्छ के रनों–छोटी खाड़ियों के दल–दली इलाकों में पाया जाने वाला दुर्लभ भारतीय जंगली गधा जो विश्व में भी केवल 4954 वर्ग किमी में फैले कच्छ के रन में ही पाया जाता है और मानसून के दौरान पानी भरने से बने छोटे–छोटे टापुओं और खाड़ियों पर उगने वाली घास व वनस्पति खाता है, वह भी सिकुड़कर लुप्त होने के कगार पर आ गया है क्योंकि खेती के लिए ये छोटी खाड़ियाँ भी उपजाऊँ बनाई जा रही हैं तथा भरी जा रही हैं। अतः पूरी आशंका है कि भारतीय जंगली गधा भी चीते की गति को प्राप्त हो सकता है।

इन वन्य जीवों के लुप्त होने के कारण

1. गैर कानूनी तरीके से शिकार करना।
2. बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण पेड़ों का कटाव।
3. सभी प्रकार की प्रदूषण समस्या।
4. प्राकृतिक आपदाएँ।
5. मानवीय गतिविधियाँ।

लुप्त होने से बचाव के लिए

सरकार द्वारा उठाए गए कदम :–

1. सन् 1970 में राष्ट्रीय स्तर पर टाईगर शिकार पर रोक लगाया गया।
2. सन् 1972 में "वाईल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट" लागू किया गया।
3. सन् 1992 में "सेन्ट्रल जू अथॉरिटी" बनाया गया जिसके कारण जीव–जन्तु का सही रख–रखाव होने लगा।
4. सन् 1996 में "वाइल्ड लाइफ एडवाइजरी" कमिटी और इन्स्टिट्यूट बनाया गया।

निष्कर्ष : – सरकार ने बहुत सक्रिय कदम उठाये जिसके कारण बहुत से वन्य प्राणी बच गये परन्तु आज भी वो खतरे में हैं। इसलिए हम सभी को मिलकर सकारात्मक कदम उठाना होगा जिससे उन्हें विलुप्त होने से बचाया जा सके।

❑❑

प्रोजेक्ट कार्य – 6

उद्देश्य – वर्षा जल संचयन का अध्ययन करना।

जल अनमोल हैं। जल के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। धरती पर जल की मात्रा वर्षा ऋतु में होने वाली वर्ष के द्वारा ही संतुलित होती हैं, परंतु वर्षा जल तभी उपयोगी हैं जब इसे संचित करके रखा जाये। भारत देश में प्रतिवर्ष अच्छी वर्षा होती हैं। बावजूद इसके कहीं बाढ़ आती हैं, तो कहीं सूखा होता है। इन सबका प्रमुख कारण वर्षा जल का सही तरीके से संचयन और इसके प्रत्येक बूँद का उचित उपयोग न किया जाना है। आज अनेक राज्य भीषण बाढ़ या अत्यधिक सूखे की चपेट में हैं। भू-जल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। आज यह न केवल एक राष्ट्र की समस्या है अपितु सारा विश्व इस समस्या से जूझ रहा है। प्रतिवर्ष वर्षा का सारा जल यूं ही बहकर बर्बाद हो जाता है। इसे रोकने का एक अत्यंत कारगर उपाय हैं – रेन वाटर हार्वेस्टिंग (Rain Water Harvesting) – जिसका अर्थ होता है "वर्षा जल का संचय" इसके तहत वर्षा के जल को विशेष विधियों के द्वारा संचय एवं संग्रह करके इसके समुचित प्रबंधन व आवश्यकतानुसार आपूर्ति किया जाता हैं।

उपयोगिता – (1) ऐसे स्थान जहाँ जल कहीं रुकता नहीं है, वहाँ "रेन वाटर हार्वेस्टिंग" की विधि का उपाय करके वर्षा जल का संग्रह किया जा सकता है। यह संग्रहित जल भूमिगत जल का स्तर तो बना कर रखता ही हैं साथ ही साथ भूमि को उपजाऊ और हरा-भरा भी रखता है।

(2) कृषक सिंचाई में इस जल का उपयोग कर सकते हैं।

(3) इस संग्रहित जल का उपयोग स्थानीय निवासी लंबे समय तक अपने दैनिक कार्य में कर सकते हैं।

(4) बाढ़, सूखा तथा भू-स्खलन की समस्याओं पर कुछ हद तक नियंत्रण पाया जा सकता हैं।

❑❑

प्रोजेक्ट कार्य – 7

उद्देश्य – एक शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन के लिए एक स्वच्छ वातावरण बहुत जरूरी हैं।

हर साल दुनिया भर के लोग 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन को मनाने के पीछे का उद्देश्य हैं – लोगों के बीच पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना।

मनुष्य की तकनीकी उन्नति से हमारे पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ रहा हैं। मनुष्य के जीवन के निम्नलिखित प्रभाव जो प्रकृति को नुकसान पहुँचा रही हैं, वे हैं –

(1) घर व उद्योगों के कचरे को जल स्त्रोतों में बहाना (जल प्रदूषण)।

(2) प्लास्टिक बैग का प्रयोग।

(3) प्राकृतिक संसाधनों का दुरूपयोग जैसे – अधिकाधिक पेड़ों को काटना।

(4) विभिन्न गैजेट्स जो हम अपने फायदे के लिए उपयोग करते हैं, प्रकृति पर दुष्प्रभाव डालता हैं। वे गैजेट्स हैं – मोबाइल फोन, गाड़ी, माइक्रोवेव आदि।

(5) औद्योगिक कंपनियों के धुँए प्राकृतिक हवा को प्रदूषित कर रही हैं।

निष्कर्ष - पर्यावरण को स्वस्थ रखने के लिए मनुष्य को अपने जीवन शैली में सुधार करना अत्यन्त आवश्यक हैं। मनुष्य प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से हर क्षण प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहा हैं । अतः पर्यावरण की सुरक्षा हमारी नैतिक जिम्मेदारी हैं।

❑❑